2023–24

हिन्दी (101)

सैद्धान्तिक

कक्षा – 12

समय–3 घंटे | पूर्णांक (56+24)=80

		अंक
(क)	अपठित बोध (गद्यांश बोध)	10
(ख)	रचनात्मक लेखन एवं जन–संचार माध्यम	18
(ग)	आरोह भाग–2	21
	पूरक पुस्तक : वितान भाग–2	07
(घ)	संस्कृत पठित बोध	06
(ड़)	पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्नोत्तर	08
(च)	वाक्य रचना	03
(छ)	व्याकरण	03
(ज)	कण्ठस्थ श्लोक लिखकर उसका हिन्दी अनुवाद	04

(क) अपठित बोध :

1. गद्यांश बोध पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक आदि पर लघुत्तरात्मक प्रश्न 10 अंक

(ख) रचनात्मक लेखन एवं जन–संचार माध्यमः 18 अंक

2. निबंध 08 अंक

3. जनसंचार की विधाओं पर दो प्रश्न

प्रिंट माध्यम सम्पादकीय
रिपोर्ट 05 अंक
आलेख 05 अंक

(ग) आरोह भाग–2 21 अंक

4.	दो काव्यांशों में से किसी एक पर अर्थग्रहण के तीन प्रश्न	(2+2+1)	05
5.	एक काव्यांश के सौन्दर्य बोध पर एक प्रश्न (भाव अथवा शिल्प)		02
6.	कविता की विषय–वस्तु पर आधारित तीन में से दो लघूत्तरात्मक प्रश्न	(2+2)	04
7.	दो में से एक गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण के तीन प्रश्न	(2+2+2)	06
8.	पाठों की विषय वस्तु पर .आधारित तीन में से दो बोधात्मक प्रश्न	(2+2)	04
	पूरक पुस्तक : वितान भाग–2		**07 अंक**
9.	विचार/संदेश पर आधारित चार में से तीन लघुत्तरात्मक प्रश्न	(1+1+1)	03
10.	विषय वस्तु पर आधारित दो में से एक निबंधात्मक प्रश्न		04

(घ) संस्कृत पठित बोध **06 अंक**

(I) संस्कृत पाठ्यपुस्तक के प्रदत्त गद्यांश पर आधारित चार लघुत्तरीय प्रश्नों में से तीन प्रश्नों के उत्तर (1+1+1) 03

(II) पाठ्यपुस्तक के प्रदत्त श्लोक के आधार पर आधारित चार लघुत्तरीय प्रश्नों में से तीन प्रश्नों के उत्तर (1+1+1) 03

(ड़) संस्कृत पाठ्य–पुस्तक पर आधारित प्रश्नोत्तर **08 अंक**

पाठ्य–पुस्तकों के पाठों पर आधारित छः लघुत्तरीय प्रश्नों में से चार प्रश्नों के संस्कृत में पूर्ण वाक्यों में उत्तर (2+2+2+2) 08

(च) संस्कृत वाक्य रचना **03 अंक**

दिये गये सुबन्त, तिडन्त, अव्यय आदि से सम्बन्धित आठ पदों में से तीन पदों को लेकर तीन वाक्यों की रचना करना (1+1+1) 03

(छ) संस्कृत व्याकरण **03 अंक**

समास, कारक, शब्द रूप धातु रूप आदि से सम्बन्धित लघुत्तरीय प्रश्न (1+1+1) 03

विसर्ग सन्धि – विसर्जनीयस्य सः ससजुषोसः अतोरोरप्लुतादप्लुते

(ज) श्लोक **04 अंक**

कोई कण्ठस्थ श्लोक लिखकर उसका हिन्दी अनुवाद करना (2+2) 04

निर्धारित पुस्तकें :

1. आरोह भाग – 2
2. वितान भाग – 2
3. अभिव्यक्ति और माध्यम
4. संस्कृत पाठ्य पुस्तक – प्रबोधिनी भाग – 2

आन्तरिक मूल्यांकन पूर्णांक–20

क0स0	मूल्यांकन बिन्दु	अंक
1.	वाचन	4
2.	श्रवण	4
3.	परियोजना कार्य	
	क) विषय वस्तु	3
	ख) भाषा एवं प्रस्तुति	2
	ग)शोध एवं मौलिकता	2
4	सतत मूल्यांकन (इकाई परीक्षा)	5
	योग	**20**

वार्तालाप की दक्षताएँः

वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय होगा।

श्रवण (सुनना) टिप्पणी का मूल्यांकन :

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद, तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 250 शब्दों का होना चाहिए। परीक्षक/अध्यापक को सुनते–सुनते परीक्षार्थी अलग कागज पर दिये हुए श्रवण–बोध के अभ्यासों को हल कर सकेंगे।

वाचन (बोलना) का मूल्यांकन :

1. चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णन : इस भाग में अपेक्षा की जायेगी कि विवरणात्मक भाषा का प्रयोग करें।
2. किसी चित्र का वर्णन : चित्र लोगों या स्थानों के हो सकते हैं।
3. किसी निर्धारित विषय पर बोलना, जिससे विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रत्यास्मरण कर सके।
4. कोई कहानी सुनना या किसी घटना का वर्णन करना।

टिप्पणीः

परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को कुछ तैयारी के लिए समय दिया जाए।

- विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल में प्रयोग आवश्यक है।
- निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव–जगत के हों जैसे–
  कोई चुटकुला या हास्य प्रसंग सुनाना।
  हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे सिनेमा की कहानी सुनाना।
  जब परीक्षार्थी बोलना आरम्भ कर दे ंतो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन

(इस बात का निश्चय करना कि क्या विद्यार्थी में श्रवण और वाचन की निम्नलिखित योग्यताएँ हैं।)

श्रवण (सुनना)	वाचन (बोलना)
विद्यार्थी में –	विद्यार्थी में –
1. परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है किन्तु वह सुसंबद्ध आशय को नहीं समझ पाता।	1. केवल अलग–अलग शब्दों और पदो के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है किन्तु एक सुसंबद्ध स्तर पर नहीं बोल सकता।
2. छोटे सम्बद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	2. परिचित संदर्भों को केवल छोटे संबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।
3. परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है।	3. अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है, अभी भी कुछ अशुद्धियां करता है जिससे प्रेषण में रूकावट आती है।
4. दीर्घ कथनों की श्रृखला को पर्याप्त शुद्धता से समझने और निष्कर्ष निकाल सकने की योग्यता है।	4. अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा प्रवाह रूप में प्रस्तुत करता है जिनसे प्रेषण में रूकावट नहीं आती।
5. जटिल कथनों के विचार–बिन्दुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करने की क्षमता है, वह उद्‌देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता प्रदर्शित करता है।	5. उद्‌देश्य और श्रोत के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है, केवल मामूली गलतियाँ करता है।

परियोजना कार्य

परियोजना शब्द 'योजना' में परि उपसर्ग लगने से बना है।

परि का अर्थ है पूर्णतः अर्थातः ऐसी योजना जो अपने आप में पूर्ण हों परियोजना कहलाती है। किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जो योजना बनाई और कार्यान्वित की जाती है उसे परियोजना कहते हैं। यह किसी समस्या के निदान या किसी विषय के तथ्यों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गई एक पूर्ण विचार योजना होती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा अनुभवात्मक अधिगम, आनंदपूर्ण अधिगम की बात कही गई है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षार्थियों के लिए हिंदी का अध्ययन एक सृजनात्मक,, साहित्यिक, सांस्कृतिक और विभिन्न प्रयुक्तियों की भाषा के रूप में प्रयोग करने और करवाने के लिए परियोजना कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण व लाभदायक सिद्ध होता है।

परियोजना का महत्त्व

- व्यक्तिगत स्तर पर खोज, कार्यवाही और ग्यारहवीं बारहवीं कक्षा के दौरान अर्जित ज्ञान, ओर कौशल। विचारों आदि पर चिंतन का उपयोग।
- सैद्धांतिक निर्माणों और तर्कों का उपयोग करके वास्तविक दुनिया की परिदृश्यों का विश्लेषण और मूल्यांकन
- एक स्वतंत्र और विस्तारित कार्य का निर्माण करने के लिए महत्वपूर्ण, और रचनात्मक चिंतन कौशल और क्षमताओं के अनुप्रयोग का प्रदर्शन
- उन विषयों पर कार्य करने का अवसर जिनमे शिक्षार्थियों की रुचि है।
- नए ज्ञान की ओर अग्रसर
- खोजी प्रवृत्ति में वृद्धि

- भाषा ज्ञान समृद्ध एवं व्यावहारिक
- समस्या समाधान की क्षमता का विकास

परियोजना कार्य निर्धारित करते समय ध्यान देने योग्य बाते

- परियोजना कार्य शिक्षार्थियों में योग्यता आधारित क्षमता को ध्यान में रखकर दिए जाएं जिससे विषय के साथ जुड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष को समझ सके। वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता पर भी ध्यान दिया जाए।
- सत्र के प्रारंभ में ही शिक्षार्थियों को विषय चुनने का अवसर मिले ताकि उसे शोध तैयारी और लेखन के लिए पर्याप्त समय मिल सके
- अध्यापिका / अध्यापक द्वारा कक्षा में परियोजना कार्य को लेकर विस्तार पूर्वक चर्चा की जाए जिससे शिक्षार्थी, उसके अर्थ महत्त्व व प्रक्रिया को भली भांति समझने में सक्षम हो सकें
- हिंदी भाषा और साहित्य से जुड़ें विविध विषयों, विधाओं, साहित्यकारों, समकालीन लेखन ,भाषा के तकनीकी पक्ष, प्रभाव अनुप्रयोग ,साहित्य के सामाजिक संदर्भों एवं जीवन मूल्य संबंधी प्रभावों आदि पर परियोजना कार्य दिए जाने चाहिए।

शिक्षार्थी को उसकी रुचि के अनुसार विषय का चयन करनी की छूट दी जानी चाहिए तथा अध्यापक /अध्यापिका को मार्गदर्शक के रूप में उसकी सहायता करनी चाहिए
परियोजना कार्य करते समय निम्नलिखित आधार को अपनाया जा सकता है

1. प्रमाणपत्र
2. आभार ज्ञापन
3. विषय सूची
4. उद्देश्य
5. समस्या का वर्णन
6. परिकल्पना
7. प्रक्रिया
8. प्रस्तुतीकरण
9. अध्याय का परिणाम
10. अध्ययन की सीमाएं
11. स्त्रोत
12. अध्यापक की टिप्पणी

- परियोजना कार्य में शोध के दौरान सम्मिलित किए गए चित्रों और संदर्भों के विषय में उचित जानकारी दी जानी चाहिए उनकी स्रोत को अवश्य अंकित करना चाहिए।
- चित्रो रेखाचित्र, विज्ञापन, ग्राफ, विषय से संबंधित आँकड़े, समाचार की कतरनें एकत्रित की जानी चाहिए।
- प्रमाणस्वरूप सम्मिलित किए गए आंकड़े,, चित्र,विज्ञापन आदि के स्रोत अंकित करने के साथ साथ समाचार पत्र पत्रिकाओं के नाम एवं दिनांक भी लिखना चाहिए।
- साहित्यक कोश, संदर्भ ग्रंथ शब्दकोश। आदि की सहायता लेनी चाहिए।
- परियोजना कार्यालय शिक्षार्थियों के लिए अनेक सम्भावनाएं हैं। उनके व्यक्तिगत विचार तथा उनकी कल्पना की विस्तृत संसार को आवाज़ सम्मिलित कियाजाए।

परियोजना कार्य के कुछ विषय सुझावात्मक रूप में दिए जा रहे हैं

- हिंदी कविता में प्रकृति चित्रण
- विभिन्न कवियों की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन
- भारतीय ग्रामीण का जीवन
- समकालीन विषय 'जी–20 और भारत'
- आदि